Reg No- 349/2006-2007

AGRICULTURE TECHNOLOGY MANAGEMENT AGENCY (AT MA) CHATRA

(श्री विधि द्वारा धान की खेती)
S.R.I. (System of Rice Intensification)

अनुमण्डल कृषि प्रक्षेत्र, तपेज चतरा

वेबसाईट– **www.atmachatra.org**
Email- atmactr@rediffmail.com
atmactr@gmail.com

(श्री विधि द्वारा धान की खेती)
S.R.I. (System of Rice Intensification)

हम श्री विधि क्यों अपनायें ? क्योकि गरीब किसान परम्परागत् तरीके से एक एकड़ से 20–25 मन तक ही धान उगाा सकता है। यदि हम धान श्री विधि से उगाएँ तो उतनी ही जमीन पर 60–80 मन धान की पैदावार होती है। पानी की जरूरत कम होती है। श्री विधि रबी, खरीफ और गरमा तीनों मौसम में अपनायी जा सकती है। नीचले खेतों के अलावा किसी भी तरह के खेत में इस विधि का प्रयाग हो सकता है। हर किसान जो धान की खेती करता है वह इस विधि से खेती कर सकता है। कोई भी किसान जो श्री विधि से धान की खेती करता है एक एकड़ जमीन से अपने पूरे परिवार हेतु साल भर के लिए पर्याप्त मात्रा में धान उगा सकता है।

श्री विधि की खास बातें :–

- ✓ 8–14 दिन उम्र का बिचड़ा लगाते हैं।
- ✓ 10 ईंच की दूरी पर एक–एक बिचड़ा लाईन में लगाते हैं।
- ✓ एक एकड़ जमीन में रोपने के लिए 2 कि.ग्रा. बीज की जरूरत होती है।
- ✓ इस विधि में 0–1 ईंच पानी (गीला एवं सूखा पद्धित) रहता है।
- ✓ कम से कम दो बार मशीन (वीडर) से घास निकालना जरूरी है।
- ✓ एक बिचड़ा से 40–70 कल्ले निकलते हैं।
- ✓ परम्परागत विधि की तुलना में 2–3 गुणा ज्यादा उपज होती है।

बीज की छंटाई एवं उपचार करना

- एक एकड़ जमीन के लिए दो किलो बीज से आधा बाल्टी पानी में इतना नमक मिलाएँ कि मुर्गी का अंडा उपर आकर तैरने लगे।
- अंडा निकालकर उसमें बीज को डाल दें।
- जो बीज उपर तैरने लगे उसे बाहर निकाल दें क्योंकि वह खराब बीज है।
- स्वच्छ बीज में नमक हटाने के लिए साफ पानी से धोएँ।
- वैभिस्टिन मिले बीज को गीली जुट की बोरी में बॉधकर 24 घंटे के लिए छायादार जगह या घर में अंकुरण के लिए रख दें।
- नमी बनाये रखने लिए उपर से पानी इतना ही छींटे ताकि पानी बोरी से टपकने न लगे।

नर्सरी तैयार करना

- एक एकड़ धान की रोपाई के लिए 30 फीट गुणा 5 फीट के छः प्लॉट (कुल 900 वर्गफीट) तैयार करें।
- सिंचाई या अतिरिक्त पानी हटाने के लिए प्रत्येक प्लॉट के बीच लगभग 1.5 फीट का फासला रखें।
- हरेक प्लॉट में 2–3 टोकरी अच्छी तरह सड़ी हुई कम्पोस्ट/गोबर की खाद डालें।
- उपचारित अंकुरित बीज को छः हिस्सों में बराबर–बराबर मात्रा में बॉट लें। प्रत्येक हिस्सों को इन छः प्लॉटों में समान रूप से छींटे।

बिचड़ों को नर्सरी से खेत तक ले जाना

- 8–14 दिन के बीच बिचड़ों में दो पत्तियॉ आ जाने पर ये रोपे जा सकते हैं। बिचड़ों को जड़ की मिट्टी सहित सावधानी से उठाया जा सकता है।
- नर्सरी से खेत तक ले जाने के लिए बिचड़ों को चौड़े बर्तन में रखकर ले जाते हैं। बिचड़े को निकालने के आधे घंटे के अंदर रोप देना चाहिए।

रोपाई

- खेत को परम्परागत तरीके से ही तैयार करते हैं। एक एकड़ खेत में 60–80 क्विं0 कम्पोस्ट/गोबर डालना चाहिए। खाद की मात्रा 32 कि0ग्रा0 नेत्रजन (70 कि0ग्रा0 यूरिया) 16 कि0ग्रा0 स्फूर (100 कि0ग्रा0 पोटाश) (12.8 कि0ग्रा0 म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति एकड़ की दर से डालें। नेत्रजन की आधी मात्रा एवं पोटाश की पूरी मात्रा रोपनी से पहले व्यवहार करें। नेत्रजन की बची आधी मात्रा (50%) का व्यवहार शीघ्र पकने वाली किस्मों में बाली निकलने के समय करें। मध्यम अवधि किस्मों में एक चौथाई (25%) पी0आई0 अवस्था में डालें। लम्बी अवधि वाली किस्मों में नेत्रजन का व्यवहार चार किस्तों (25% रोपनी शेष तीन बार समान मात्रा में फसल की आवश्यकता के अनुरूप यथासमय) में किया जाना चाहिए। नेत्रजन की हानि कम करने के लिए 1.0 कि0ग्रा0 यूरिया को 300 ग्राम नीम की खल्ली में मिलाकर उपरिवेश करनी चाहिए।
- खेत के चारो ओर 8 ईंच गहरी और 1.5 फूट चौड़ी नाली बनाते हैं।
- रोपाई करते समय खेत गीला होना चाहिए। कादो के उपर एक ईंच से कम पानी होना चाहिए।
- बिचड़े को मिट्टभ् के साथ हल्के से कादो में बैठा दें।
- लाईन से लाईन बिचड़े से बिचड़े की दूरी 10 ईंच होनी चाहिए।
- रोपे गए बिचड़ा को आधे घंटे के अंदर नया जीवन मिल जाता है।

खर–पतवार निकालना और पानी का रख–रखाव

- रोपाई के बाद 15 दिन के अंतर पर कम से कम दो बार कोनोवीडर मशीन चलाना चाहिए।
- कोनोवीडर मशीन मिट्टी को नीचे से पलट देती है जिससे मिट्टी में हवा लगती है और खर–पतवार इसमें मिलकर खाद बन जाते हैं साथ ही श्रम भी कम लगता है।

धान की खड़ी फसल का ध्यान रखना

- खेत में पानी की एक ईंच पतली परत रखते हैं।
- स्वस्थ जड़ के लिए बीच–बीच में मिट्टी को हवा लगना भी आवश्यक है।
- कोनोवीडर मशीन का इस्तेमाल कर मिट्टी को पलटने से नए उग रहे खर–पतवार को नष्ट किया जाता है।

धान की पैदावार

- एक जगह पर प्रत्येक बिचड़े से 70–80 कल्ले फूटते हैं।
- एक जगह पर अच्छी बालियों वाले 25–50 कल्ले मिलते हैं।
- प्रत्येक बाली में 300–400 दाने आते हैं।
- श्री विधि से एक एकड़ में 60–80 मन धान पैदा होता है।

संरक्षक
श्री मनोज कुमार
उपायुक्त सह अध्यक्ष, आत्मा चतरा
प्रायोजक
श्री धीरेन्द्र कुमार पाण्डे
परियेाजना निदेशक, आत्मा चतरा
सामाग्री– श्री अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय (प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, आत्मा)
टंकण – अमित कुमार सिन्हा (कम्प्युटर ऑपरेटर, आत्मा)
वेबसाईट– www.atmachatra.org
ईमेल– atmactr@rediffmail.com
atmactr@gmail.com